



अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

जॉन डचर: (515) 334-3464

dna@qwestoffice.net

जेरीएनी थॉमस: (713) 513- 9513

jerianne.thomas@fleishman.com

बायोटेक फसलें 1 बिलियन हैक्टेयर से ज्यादा पर लहराईं

विकासशील देशों ने तेज़ी से वृद्धि करते हुए औद्योगिक देशों से अधिक बायोटेक फसलें लगाईं

साओ पाउलो, ब्राज़ील (22 फरवरी, 2011) – आईएसएएए (इन्टरनॅशनल सर्विस फ़ॉर द एक्विजिशन ऑफ़ एग्री-बायोटेक अप्लिकेशन्स) द्वारा आज जारी वार्षिक रिपोर्ट के लेखक क्लाइव जेम्स के अनुसार व्यवसायीकरण के सिर्फ 15 साल बाद संचित बायोटेक फसलें 2010 में 1 बिलियन हैक्टेयर से अधिक पर उगाई गईं - यह एक ऐसा मील का पत्थर है जो इस बात को प्रमाणित करता है कि बायोटेक फसलें ही हमारे भविष्य का सहारा हैं ।

29 देशों में 15.4 मिलियन किसानों - जो कि जैव प्रौद्योगिकी का फायदा उठा रहे हैं, में से एक किसान द्वारा 2010 में 1 बिलियन वे हैक्टेयर में बायोटेक फसल लगाई। तुलना के लिए 1 बिलियन हैक्टेयर मोटे तौर पर चीन या अमेरिका के विशाल जमीनी क्षेत्र के बराबर है। आईएसएएए के अध्यक्ष और संस्थापक जेम्स के अनुसार 1996 और 2010 के बीच 87 गुना की अभूतपूर्व वृद्धि के साथ बायोटेक फसलें आधुनिक कृषि के इतिहास में सर्वाधिक तेजी से अपनाई जाने वाली फसल प्रौद्योगिकी है।

जेम्स ने कहा, “2009 तथा 2010 के बीच – 14 मिलियन हैक्टेयर -- या 10 प्रतिशत की बायोटेक हैक्टेरेज बढ़ोत्तरी दर्ज की जो अब तक की दूसरी सबसे बड़ी वार्षिक हैक्टेयर वृद्धि है - जिसमें 2010 में वैश्विक रूप से 148 मिलियन हैक्टेयर पर फसलें उगाई गईं।”

2010 में पहली बार, सबसे अधिक बायोटेक फसलें उगाने वाले सभी दस देशों में उत्पादन 1 मिलियन हैक्टेयर से भी ज्यादा में था जो कि भविष्य में बायोटेक फसलें की प्रभावशाली वृद्धि का स्पष्ट संकेत देता है। बायोटेक फसलों को 10 लाख हैक्टर से अधिक उगाने वाले मुख्य दस देश हैं: संयुक्त राज्य अमेरिका (66.8 मिलियन), ब्राज़ील (25.4 मिलियन), अर्जेंटीना (22.9 मिलियन), भारत (9.4 मिलियन), कनाडा (8.8 मिलियन), चीन (3.5 मिलियन), पैराग्वे (2.6 मिलियन), पाकिस्तान (2.4 मिलियन), दक्षिण अफ्रीका (2.2 मिलियन) और उरूग्वे (1.1 मिलियन)।

ब्राज़ील ने लगातार दूसरे वर्ष विश्व भर में संपूर्ण बायोटेक फसल रोपण में वर्ष-दर-वर्ष की सर्वाधिक बढ़ोत्तरी दर्ज की, 2010 में 4 मिलियन हैक्टर की प्रभावशाली वृद्धि से कुल 25.4 मिलियन हैक्टेयर पर बायोटेक फसलों उगाई, जो कि 2009 से 19 प्रतिशत अधिक है। केवल अमेरिका ही बायोटेक फसलों को समर्पित कुल फसल क्षेत्र में ब्राज़ील से आगे है। ऑस्ट्रेलिया जो कई वर्षों के सूखे से उबरा था, में बायोटेक फसल रोपण में वर्ष-दर-वर्ष की सबसे बड़ी आनुपातिक वृद्धि हुई जो 184 प्रतिशत थी। इसके बाद 126 प्रतिशत की वृद्धि के साथ बुरुकीना फासो में 80,000 किसानों ने 65 प्रतिशत की अंगीकरण दर पर 260,000 हैक्टेयर में फसल रोपी।

ब्राज़ील स्थित सेलेरेस के निदेशक और आईएसएए की वार्षिक रिपोर्ट में सहयोग करने वाले डॉ. एंडरसन गलवाओ गोम्स के अनुसार अंतरराष्ट्रीय निर्यात व्यापार करार करने के बाद ब्राज़ील में अनेक बायोटेक फसलों को स्वीकृति (कुल 27 और अकेले 2010 में 8 स्वीकृति) देने के साथ ब्राज़ील अब दुनिया की 17 प्रतिशत बायोटेक फसलें उगाता है। बायोटेक फसलों के कारण उत्पादन में हुई वृद्धि से ब्राज़ील का वार्षिक अनाज उत्पादन 1990 से 2010 के बीच दोगुना करने में सहायता मिली है जबकि फसल क्षेत्र में केवल 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। गोम्स ने टिप्पणी की कि बायोटेक फसलों से मिले फायदों, सुदृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और नए तथा महत्वपूर्ण अनुसंधान, बायोटेक क्षेत्र में होने वाले विकास निवेशों को प्रेरणा दे रहा है जो कि जैव

प्रौद्योगिकी को अपनाने में कारगर साबित होगा। 100 मिलियन हैक्टेयर तक और अधिक फसलभूमि को पानी से सींचकर उत्पादन क्षेत्र में लाने की क्षमता के साथ ब्राज़ील दुनिया भर में बायोटेक फसलों को अंगीकार करने के मामले में प्रेरणादायी शक्ति बना रहेगा और इस वृद्धि को सहारा देने के लिए वह आधुनिक संरचना में निवेश कर रहा है।

“विकासशील देशों ने 2010 में दुनियाभर में 48 प्रतिशत बायोटेक फसलें उगाईं और 2015 तक बायोटेक फसलों की बुवाई में वह औद्योगिक देशों से आगे निकल जाएंगे,” जेम्स ने कहा। “स्पष्ट रूप से लेटिन अमेरिका और एशिया के देश प्रौद्योगिकी के व्यवसायीकरण के दूसरे दशक की शेष अवधि के दौरान बायोटेक फसलों से रोपे गए वैश्विक हैक्टेयरों में सर्वाधिक वृद्धि करेंगे।”

बायोटेक फसलें उगाने वाले पाँच प्रमुख विकासशील देशों – चीन, भारत, ब्राज़ील, अर्जेंटीना और दक्षिण अफ्रीका ने 2010 में 63 मिलियन हैक्टेयर में बायोटेक फसलें उगाईं जो कि विश्व की कुल बायोटेक फसलों के 43 प्रतिशत के बराबर है। 29 में से 19 विकासशील देश हैं जिन्होंने बायोटेक फसलों को अपनाया और औद्योगिक देशों की केवल 5 प्रतिशत वृद्धि या 3.8 मिलियन हैक्टेयर के मुकाबले 2009 में 17 प्रतिशत या 10.2 मिलियन हैक्टेयर की दर से वृद्धि की।

90 प्रतिशत से ज्यादा बायोटेक फसलों को उगाने वाले छोटे और संसाधन-गरीब किसान हैं

जेम्स के मुताबिक 2010 में बायोटेक फसलों को उगाने वाले 15.4 मिलियन किसानों में से 14.4 मिलियन विकासशील देशों के छोटे और संसाधन-गरीब किसान थे; ये किसान दुनिया के कुछ सबसे गरीब लोगों में से हैं और बायोटेक फसलें उनकी गरीबी का उन्मूलन करने में योगदान दे रही हैं। चीन और भारत में अब अधिकांश छोटे स्तर के किसान बायोटेक फसलों का उपयोग कर रहे हैं, 6.5 मिलियन चीनी किसानों और 6.3 मिलियन भारतीय किसानों ने बायोटेक फसलों के बीज बोये। उल्लेखनीय रूप से पिछले 15 वर्षों में दुनियाभर के किसानों ने बायोटेक फसलें उगाने के लिए 100 मिलियन से अधिक स्वतंत्र निर्णय लिए हैं।

जेम्स ने कहा कि एशिया भर में 1 बिलियन से ज्यादा लोग जो लगभग डेढ़ हैक्टेयर पर खेती करने वाले छोटे स्तर के चावल-उत्पादक 250 मिलियन परिवारों के सदस्य हैं, 2015 से पहले प्रस्तुत किए जाने वाले कीट-रोधी Bt चावल के प्रत्याशित वाणिज्यीकरण के संभावित लाभार्थी हैं।

जेम्स ने कहा, “यह महत्वपूर्ण प्रगति है।” “विटामिन ए की कमी वाली आबादी के लिए गोल्डन चावल से प्रतिदिन 6000 लोगो' को मृत्यु से बचा जा सकता है, जिसकी 2013 तक फिलीपींस में बुवाई के लिए उपलब्ध होने की संभावना है, इसके बाद बंगलादेश, इंडोनेशिया और वियतनाम को गोल्डन चावल उपलब्ध होगा।”

बायोटेक फसलों के उत्पादन वाले नए देश, नई बायोटेक फसलें

2010 में तीन देशों ने पहली बार वाणिज्यिक रूप से बायोटेक फसलें उगाईं और एक देश ने बायोटेक फसलें फिर से उगाना शुरू किया। पाकिस्तान के करीब 600,000 किसानों और म्यांमार के 375,000 किसानों ने कीटरोधी Bt कपास बोया और स्वीडन (बायोटेक फसलों को वाणिज्यिक रूप देने वाला पहला स्कैंडीनेवियन देश) ने औद्योगिक तथा फीड उपयोग के लिए अनुमोदित नया बायोटेक उच्च गुणवत्ता वाला स्टार्च आलू बोया। जर्मनी ने भी 2010 में वही बायोटेक आलू बोये और अब बायोटेक मक्का या आलू उगाने वाले यूरोपीय संघ के आठ राष्ट्रों में अपना स्थान पुनः स्थापित किया।

जेम्स ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि 2015 तक 12 अतिरिक्त देश बायोटेक फसलें स्वीकार करेंगे जिससे इन्हें अपनाने वाले देशों की सूची 40 तक पहुंच जाएगी (इस संख्या की भविष्यवाणी आइएसएएए द्वारा 2005 में की गई थी), किसानों की संख्या दोगुनी होकर 20 मिलियन हो जाएगी और वैश्विक हैक्टेरेज दोगुनी होकर 200 मिलियन हैक्टेयर हो जाएगी। एशिया, पश्चिमी अफ्रीका, पूर्वी/दक्षिणी अफ्रीका के तीन क्षेत्रों में से प्रत्येक से और लैटिन/मध्य अमेरिका तथा पश्चिमी एवं पूर्वी यूरोप के कुछ क्षेत्रों से, तीन से चार तक अतिरिक्त देशों के बायोटेक फसलें उगाने की संभावना है। मक्का के जैवविविधता वाले केंद्र- मैक्सिको ने 2010 में Bt और HT (हर्बिसाइड टोलरेंट) मक्का के सफलतापूर्वक परीक्षण किये। मैक्सिको पहले ही कई वर्षों से सफलतापूर्वक बायोटेक कपास और सोयाबीन उगा रहा है।

जेम्स ने कहा कि मौजूदा चार बड़ी हैक्टेरेज बायोटेक फसलों – मक्का, सोयाबीन, कपास और कनोला – के बायोटेक अंगीकरण के बढ़ने की जबरदस्त संभावनाएं हैं, जो 2010 में लगभग 150 मिलियन हैक्टेयर उगाई गईं और अब उनके हैक्टेरेज के दोगुना होकर 300 मिलियन हैक्टेयर हो जाने की संभावना है। अगले पाँच सालों में बायोटेक चावल और सूखा सहनशील (drought tolerant) मक्का के व्यवसायीकरण से वैश्विक नेतृत्व

संभवतः सकारात्मक बनेगा और एशिया और दुनिया भर में बायोटेक खाद्य और चारा फसलों की स्वीकृति को प्रभावित करेगा। सूखा झेलने वाली मक्का के अमेरिका में जल्द से जल्द 2012 तक और महत्वपूर्ण रूप से अफ्रीका में 2017 तक व्यवसायीकरण होने की आशा है। चार वर्ष पहले बायोटेक HT गेहूं पर देरी करने के निर्णय पर फिर से विचार किया जा रहा है और अनेक देश सूखा झेलने, रोग रोधी होने और खाद्यान्न की गुणवत्ता सहित बहु विशेषताओं वाले बायोटेक गेहूं के विकास के लिए तेजी से काम कर रहे हैं – वाणिज्यीकरण के लिए इनमें से पहले प्रकार के बायोटेक गेहूं के 2017 तक तैयार हो जाने की संभावना है। जेम्स को उम्मीद है कि वाणिज्यीकरण के लिए मध्यम हैक्टरेज वाली कुछ फसलें 2015 तक अनुमोदित हो जाएंगी जिनमें ये शामिल हैं: बायोटेक आलू- दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण रोग प्रतिरोधी - “लेट ब्लाइट” (late blight) आलु जो कि 1845 में आयरिश अकाल का कारण था; कृषि एवं गुणवत्ता संबंधी अनेक बेहतर विशेषताओं के साथ गन्ना, रोग प्रतिरोधी केले, Bt बैंगन, टमाटर, ब्रोकोली और बंदगोभी तथा साथ कुछ समाज के निचले तबके के काम आने वाली फसलें जैसे कि बायोटेक कसावा, शकरकन्दी, दालें और मूंगफली। 2010 में बायोटेक फसलें उगाने वाले 29 देश विश्व की 59 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और जेम्स पूर्ण रूप से आशावादी हैं कि बायोटेक फसलें खाद्य सुरक्षा और गरीबी उन्मूलन के 2015 मिलेनियम के विकास लक्ष्यों को पाने में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

जेम्स ने कहा, “बायोटेक फसलों ने शायद 2015 मिलेनियम के विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर बढ़ने में कम सराही गई भूमिका अदा की है। 2015 तक उनका प्रभाव विश्वव्यापी रूप से अधिक मान्यता प्राप्त करेगा।”

जेम्स ने अनुसार बायोटेक फसलें सस्टेनबिलिटी और जलवायु परिवर्तन को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। “बायोटेक फसलों ने कार्बन उत्सर्जन को कम करने और भूमि को बचाने तथा दुनिया के कुछ सबसे गरीब लोगों की गरीबी उन्मूलन में मदद की है।”

दुनिया के छोटे और कम संसाधनों वाले और ज़्यादा किसानों को बायोटेक फसलों का लाभ पहुंचाने के लिए जेम्स का कहना है कि छोटे और गरीब विकासशील देशों को ऐसी समुचित नियामक व्यवस्थाओं की तत्काल जरूरत है जो जिम्मेदार और कठोर हों – लेकिन कष्टदायक न हों।

अधिक जानकारी या कार्यकारी सारांश के लिए www.isaaa.org पर लॉग ऑन करें।

###

यह रिपोर्ट दो यूरोपीय परोपकारी संगठनों द्वारा पूरी तरह वित्त पोषित की गई है: इटली के द बुसोलेरा-ब्रांका फाउन्डेशन, जो बायोटेक फसलों के ज्ञान के खुले आदान-प्रदान का समर्थन करता है जिससे वैश्विक समाज को निर्णय लेने में मदद होती है; और ईबेरकाजा के अंतर्गत एक परोपकारी इकाई, जो स्पेन के सबसे बड़े बैंकों में से एक है जिसका मुख्यालय स्पेन के मड्रिड उगाने वाले क्षेत्र में स्थित है।

द इन्टरनॅशनल सर्विस फॉर द एक्विसिशन ऑफ़ एंथ्री-बायोटेक अप्लिकेशन्स (आयएसएएए, ISAAA) एक गैर-मुनाफ़े वाला संगठन है, जिनके केन्द्रों का एक अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क है जो फसल बायोटेक्नॉलॉजी ज्ञान और अनुप्रयोगों को बांटकर भूख और गरीबी के उन्मूलन में योगदान देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। क्लाइव जेम्स, आयएसएएए के संस्थापक और अध्यक्ष, पिछले 30 वर्षों से एशिया, लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के विकासशील देशों में रहे हैं और/या काम किया है और उन्होंने अपने प्रयासों को कृषि अनुसंधान और विकास के मुद्दों के प्रति समर्पित करने के साथ फसल बायोटेक्नॉलॉजी और वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित रखा है।